

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति को अधिक सशक्त, प्रभावपूर्ण, आकर्षक एवं साहित्यिक बनाने के लिए भाषा के प्रयोग में मुहावरे एवं लोकोक्तियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके प्रयोग से कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भावों को गहराई के साथ व्यक्त किया जा सकता है।

मुहावरे की विशेषताएँ

1. मुहावरे के रूप में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। उदाहरणतः 'फूल कर कुप्पा हो जाना' का प्रयोग किसी स्त्री के संबंध में करते समय यह नहीं कहा जा सकता कि वह फूल कर कुप्पी हो गई। सही प्रयोग यही होगा कि 'वह फूल कर कुप्पा हो गई'।
2. मुहावरा वाक्य का अंग बनकर प्रयुक्त होता है, स्वतंत्र रूप से नहीं, जैसे- कोई कहे कि 'पेट काटना' तो इससे कोई विलक्षण अर्थ प्रकट नहीं होता है। पर इसकी जगह यदि कोई कहे कि 'मैंने पेट काटकर अपने लड़के को पढ़ाया' तो वाक्य के अर्थ में नवीनता और रोचकता आ जाती है।
3. मुहावरे का अभिधार्थ नहीं, बल्कि उसका लक्ष्यार्थ ही ग्रहण किया जाता है: जैसे- 'नाकों चने चबाना' का अर्थ 'नाक से चने चबाना' के अर्थ के रूप में ग्रहण करना हास्यास्पद होगा। वस्तुतः उसका लक्ष्यार्थ अर्थ 'अधिक परेशान' होना ही होगा।
4. मुहावरे का वाक्य में जब प्रयोग किया जाता है तो उसकी क्रिया, लिंग वचन, कारक आदि के अनुसार बदल जाती है।

नीचे कुछ मुहावरे अर्थ के साथ दिए जा रहे हैं-

मुहावरा	अर्थ
1. अंग फूले न समाना	बहुत प्रसन्न होना
2. अंगारों पर पैर रखना	जान बूझकर मुसीबत में पड़ना
3. अंधे की लाठी	एकमात्र सहारा
4. अक्ल का दुश्मन	मूर्ख व्यक्ति
5. अन्न-जल उठना	स्थान विशेष पर रहने का संयोग न होना

- | | |
|----------------------------|---------------------------------------|
| 6. अपना राग अलापना | अपने स्वार्थ की बातें ही करना |
| 7. अपने पैरों पर खड़ा होना | स्वावलंबी होना |
| 8. आँख चुराना | सामने न आना, कतराना |
| 9. आँख नीची होना | लज्जित होना |
| 10. आँखें ठंडी होना | अत्यधिक शांति या प्रसन्नता मिलना |
| 11. आँसू पोंछना | सांत्वना देना |
| 12. ईश्वर को प्यार होना | मर जाना |
| 13. उँगली पर नाचना | किसी के इशारे पर चलना |
| 14. जले पर नमक छिड़कना | दुःखी व्यक्ति को और अधिक दुःखी करना |
| 15. कठपुतली होना | पूर्णतः किसी के वश में होना |
| 16. सिर पर कफ़न बाँधना | मरने के लिए तैयार होना |
| 17. कमर टूटना | भारी आपत्ति का आना, बहुत नुकसान होना |
| 18. कलाई खुलना | भेद खुल जाना |
| 19. कलेजा ठंडा होना | शांति मिलना |
| 20. गंगा नहाना | बड़ा कार्य पूर्ण करना, कृतार्थ होना |
| 21. गड़े मुर्दे उखाड़ना | बीती बातों को अनावश्यक दुहराना |
| 22. गाँठ बाँधना | हमेशा के लिए याद रखना |
| 23. गाल बजाना | अनावश्यक रूप से बढ़-चढ़ कर बातें करना |
| 24. गोबर गणेश होना | मूर्ख होना |
| 25. घड़ों पानी पड़ जाना | बहुत अधिक शर्मिंदा होना |
| 26. घी के दीये जलाना | खुश होना, अधिक संपत्ति होना |
| 27. चारपाई पकड़ना | बहुत बीमार पड़ना |
| 28. छाती पर मूँग दलना | बहुत दुःखी करना, अपमानित करना |
| 29. छाती पर साँप लोटना | कष्ट होना, जलन होना |
| 30. झख मारना | व्यर्थ समय नष्ट करना |
| 31. टोपी उछालना | किसी का अपमान करना |
| 32. ठंडा पड़ जाना | मर जाना, मंदा होना |
| 33. तलवे सहलाना | खुशामद करना |

- | | |
|--------------------------------|---|
| 34. तारे गिनना | व्यग्रता से प्रतीक्षा करना |
| 35. तारे तोड़ लाना | बहुत बड़ा काम कर डालना |
| 36. तृती बोलना | बहुत प्रभाव होना |
| 37. तेली का बैल होना | हमेशा काम में लगे रहना |
| 38. दम तोड़ना | आखिरी साँस गिनना, मर जाना |
| 39. दाँत काटो रोटी होना | अधिक मित्रता होना |
| 40. दाँतों में जीभ होना | चारों ओर विरोधियों के बीच घिरे रहना |
| 41. दाहिना हाथ होना | बहुत बड़ा सहायक होना |
| 42. दिमाग चाटना | अनावश्यक बोलकर परेशान करना |
| 43. दिमाग में भूसा होना | पूर्णतया मूर्ख होना |
| 44. दूज का चाँद होना | बहुत कम दिखाई पड़ना |
| 45. दो टूक जवाब देना | स्पष्ट बात करना |
| 46. धरती पर पाँव न पड़ना | अभिमान से भरा होना |
| 47. नमक हलाल होना | कृतज्ञ होना |
| 48. नाक काटना | बहुत अपमानित करना |
| 49. नाक रख लेना | इज्जत बचा लेना |
| 50. नाक रगड़ना | बहुत खुशामद करना |
| 51. नित्यानबे के फेर में पड़ना | रुपया बटोरने के चक्कर में पड़ना, कंजूस बनना |
| 52. नींव का पत्थर होना | मुख्य सहायक होना |
| 53. पगड़ी उछालना | अपमान करना |
| 54. पाँव में शनीचर होना | एक स्थान पर स्थिर न रहना |
| 55. पारा उतरना | क्रोध शांत होना |
| 56. पीठ दिखाना | हार कर भाग जाना |
| 57. बट्टा लगाना | कलंक लगाना |
| 58. बहती गंगा में हाथ धोना | अवसर का फायदा उठाना |
| 59. बाग-बाग होना | बहुत प्रसन्न होना |
| 60. बाल की खाल निकालना | नुक्ताचीनी करना, बात को बढ़ाकर कहना |
| 61. घोड़े सवार होना | कुपित होना, किसी काम के लिए हठ पकड़ लेना |

- | | |
|----------------------------|---|
| 62. भौंह चढ़ाना | नाराज होना |
| 63. मगज चाटना | अनावश्यक बोलकर परेशान करना |
| 64. मीठी नोंद सोना | निश्चिंत होकर सोना |
| 65. मुँह फुलाना | नाराज होना |
| 66. यमपुर पहुँचाना | मार डालना |
| 67. राई का पर्वत करना | छोटी बात को बहुत बढ़ाकर कहना |
| 68. लकीर पर चलना | बिना समझे पुरानी प्रथा पर चलते रहना |
| 69. लहू पसीना एक करना | बहुत परिश्रम करना |
| 70. शर्म से पानी-पानी होना | बहुत लज्जित होना |
| 71. सड़क नापना | व्यर्थ में इधर-उधर घूमना |
| 72. साँप को दूध पिलाना | शत्रु की सहायता करना |
| 73. सिर से पानी गुज़र जाना | सहनशीलता की सीमा टूट जाना |
| 74. सूरज को दीपक दिखाना | बहुत विद्वान व्यक्ति को कुछ बतलाना |
| 75. सूरज पर थूकना | समर्थ व्यक्ति का व्यर्थ में अपमान करना, निर्दोष को दोषी बताना |
| 76. सोने में सुहागा होना | अच्छी चीज़ का और उच्छा हो जाना |
| 77. हथियार डालना | पराजय स्वीकार कर लेना |
| 78. हथेली पर सरसों जमाना | असंभव काम को संभव कर डालना |
| 79. हाथ धोकर पीछे पड़ना | किसी को परेशान करने के लिए हमेशा तैयार रहना |
| 80. होश उड़ना | डर जाना |

लोकोक्तियाँ

लोक में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति या 'कहावत' कहते हैं। सामाजिक जीवन के अनुभव के आधार पर लोकोक्तियाँ बनती हैं। लोकोक्तियाँ वाक्य का अंग न बनकर प्रायः पूर्ण वाक्य होती हैं: जैसे-

‘कोयल होय न उजली, सौ मन साबुन लाय’।

इसमें कोयल का कालापन उसके जन्मजात गुण को प्रकट करता है। 'उजली होना' इस गुण के परिवर्तन को प्रकट करता है। और 'सौ मन साबुन' विभिन्न प्रकार के प्रयत्न एवं उपाय का बोध कराता है। अतः पूरी लोकोक्ति का अर्थ है-असंख्य उपायों से भी किसी व्यक्ति का जन्मजात गुण बदलना संभव नहीं है।

मुहावरे एवं लोकोक्तियों में यह अंतर है कि मुहावरे को वाक्यांश की भाँति प्रयोग किया जाता है और लोकोक्ति अपने-आप में पूर्ण तथा स्वतंत्र होती है। वाक्य में प्रयुक्त होने पर भी उसकी स्वतंत्र सत्ता बनी रहती है।

मुहावरे प्रायः 'ना' अंत्य होते हैं, लेकिन लोकोक्ति में ऐसा नहीं होता। नीचे कुछ लोकोक्तियाँ अर्थ के साथ दी जा रही हैं-

लोकोक्ति

अर्थ

- | | |
|---|---|
| 1. अंत बुरे का बुरा | बुरे कर्म का फल बुरा ही होता है। |
| 2. अंधा क्या जाने बसंत की बहार | जिसने जो चीज़ देखी नहीं वह उसकी विशेषता क्या जाने ? |
| 3. अपना हाथ जगन्नाथ | स्वयं का किया कार्य सबसे अच्छा होता है। |
| 4. आप भला तो जग भला | अच्छे को सभी अच्छे लगते हैं। |
| 5. अभी दिल्ली दूर है | अभी बहुत कार्य शेष हैं, मंज़िल दूर है। |
| 6. आसमान पर थूका मुँह पर आता है | बड़ों की निंदा करने से स्वयं अपनी ही हानि होती है। |
| 7. ऊँट के मुँह में जीरा | आवश्यकता अधिक लेकिन मिलना बहुत कम। |
| 8. एक तंदरुस्ती हजार नियामत | स्वास्थ्य बहुत बड़ी चीज़ है। |
| 9. एक तो चोरी, दूसरे सीना जोरी | अपराधी होकर भी उलटे रोब डालना। |
| 10. एक म्यान में दो तलवार | सबल प्रतिद्वंद्वी एक साथ नहीं रह सकते |
| 11. ओस से प्यास नहीं बुझती | आवश्यकता से बहुत कम मिलने पर तृप्ति नहीं होती |
| 12. कड़वा थू-थू मीठा गप-गप | अच्छी चीज़ को लेना और बुरे को फेंक देना |
| 13. कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर | एक-दूसरे की सहायता लेनी ही पड़ती है |
| 14. करिए मन की सुनिए सबकी | बात सब लोगों की सुननी चाहिए लेकिन अंतःकरण की आवाज़ माननी चाहिए। |
| 15. कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली | बहुत समर्थ एवं धनी से छोटे और गरीब की तुलना नहीं हो सकती है |
| 16. कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमती का कुनबा जोड़ा | अनावश्यक वस्तुओं का मेल बैठाना, बिना सिर पैर का काम |
| 17. काज़ी दुबले क्यों? शहर के अंदेश से | व्यर्थ की चिंता करना |

- | | |
|--|--|
| 18. काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती | कपट और धोखे का व्यापार हमेशा नहीं किया जा सकता |
| 19. कोयले की दलाली में हाथ काला | बुरे काम से बुराई ही पैदा होती है |
| 20. कौवों के कोसे ढोर नहीं मरते | बुरे आदमी के कहने से अच्छे आदमी की बुराई नहीं होती |
| 21. खग ही जाते खग की भाषा | चालाक ही चालाक की बात समझ सकता है |
| 22. गुरु गुड़ ही रहे, चेले शक्कर | चेला गुरु से भी आगे बढ़ गया (व्यंग्य में कहते हैं) |
| 23. घर का भेदी लंका ढाए | आपस की फूट से सर्वनाश होता है |
| 24. घर फूंक तमाशा देखना | शान के लिए औकात से बाहर खर्च करना |
| 25. चोर की दाढ़ी में तिनका | अपराधी व्यक्ति हमेशा सशंकित रहता है |
| 26. जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं | डिँग हाँकने वालों से काम नहीं होता |
| 27. जंगल में मोर नाचा, किसने देखा? | योग्यता एवं वैभव का ऐसे स्थान पर प्रदर्शन जहाँ कद्र करने वाला कोई न हो |
| 28. जिस बरतन में खाना उसी में छेद करना | कृतघ्न होना |
| 29. जीवित मक्खी नहीं निगली जाती | जान बूझकर गलत काम नहीं किया जाता है |
| 30. जिसकी लाठी उसकी भैंस | बलवान की ही जीत होती है। |
| 31. जैसा देश वैसा भेष | जहाँ रहो, वहाँ जैसी रीति पर चलो |
| 32. जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ | दोनों ही एक समान दुष्ट एवं भयंकर प्रकृति रखते हैं |
| 33. डूबते को तिनके का सहारा | आपत्ति के समय थोड़ी सहायता भी बड़ी होती है |
| 34. तीन लोक से मथुरा न्यारी | सबसे पृथक् और अनोखा |
| 35. थोथा चना बाजे घना | ज्ञान कम दिखावा अधिक |
| 36. दूध का दूध, पानी का पानी | निष्पक्ष न्याय करना |
| 37. धोबी का कुत्ता घर का न घाट का | एक स्थान पर स्थिर न रहने वाला व्यर्थ का मनुष्य |
| 38. न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी | कोई काम न करने के लिए बहुत बड़ा बहाना बनाना |

39. न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी
40. नेकी कर दरिया में डाल
41. नौ की लकड़ी नब्बे ढुलाई
42. नौ सो चूहे खा के बिल्ली हज को चली
43. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद
44. बिन मांगे मोती मिले, माँग मिल न भीख
45. बिल्ली के भागों छींका टूटा
46. बोए पेड़ बबूल का आम कहाँ से होय
47. भागते भूत की लँगोटी भली
48. मान न मान मैं तेरा मेहमान
49. मुख में राम बगल में छुरी
50. मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त
51. मुरगा बाँग न देगा, तो क्या सुबह न होगी
52. यह मुँह और मसूर की दाल
53. रस्सी जल गई पर ऐंठन नहीं गई
54. पूत के पाँव पालने में पहचाने जाते हैं
55. लेना एक न देना दो

किसी वस्तु को नष्ट करने के लिए उसके मूल को ही नष्ट करना
 किसी का उपकार करके भूल जाना श्रेष्ठ है
 जितने मूल्य का सामान नहीं उससे बहुत अधिक व्यय हो जाना
 जीवन भर बुरे कर्म करके अंत में संत बनने का ढोंग करना
 मूर्ख व्यक्ति गुण को सही परख नहीं कर सकता।
 मिलने वाला होता है तो अपने आप मिल जाता है, माँगने पर भीख भी नहीं मिलती।
 अचानक लाभ होना
 जैसा किया वैसा फल पाया, बुरे काम का फल बुरा ही होता है।
 कुछ न मिलने पर थोड़ा मिलना भी अच्छा है
 जबरदस्ती किसी के गले पड़ना
 मन में दुष्टता और बाह्य से प्रेम दिखाना
 जिसका काम हो वह सुस्त हो, दूसरे अधिक सक्रिय हों
 किसी एक व्यक्ति के न रहने से काम नहीं रुकता
 योग्यता से अधिक प्राप्त करने का इच्छुक
 बरबाद हो जाने पर भी अहंकार बना रहना
 होनहार लड़का बचपन में ही पहचान लिया जाता है
 किसी से कोई मतलब नहीं, न किसी से कुछ लेना न किसी को कुछ देना

- | | |
|---|---|
| 56. खिसियाई बिल्ली खंभा नीचे | अपनी शर्म छिपाने के लिए व्यर्थ का झगड़ा करना
अथवा खीझ निकालना |
| 57. सब एक ही थैले के चट्टे-
बट्टे हैं | जहाँ सब एक ही प्रकार के व्यक्ति हों |
| 58. सावन के अंधे को हरा ही
हरा सूझे | अंधा होने के पहले देखा गया दृश्य ही स्मृति में बना
रहता है |
| 59. ओखली में सिर दिया तो
मूसल से क्या डरना | जब कोई काम शुरू किया तब कठिनाइयों से क्या
डरना? |
| 60. सिर मुंडाते ओले पड़े | कार्य आरंभ करते ही मुसीबत आई |
| 61. सीधी उँगली से घी नहीं
निकलता | अच्छे कार्य-फल के लिए मेहनत करनी पड़ती है |
| 62. हमारी बिल्ली और हम से
म्याऊँ | हमारे आश्रित रहकर हम पर ही रोब जमाना |
| 63. हींग लगे न फिटकरी, रंग
चोखा ही आवे | बिना खर्च किए काम अच्छा चाहना |
| 64. हाथ कंगन को आरसी क्या | प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता है |
| 65. हाथी के दांत खाने के और
दिखाने के और | कहना कुछ और करना कुछ |
| 66. होनहार बिरवान के होत
चिकने पात | प्रतिभावन लड़के की योग्यता एवं प्रतिभा का परिचय
बचपन से ही मिलने लगता है |

प्रश्न-अभ्यास

1. मुहावरे और लोकोक्तियों में क्या अंतर है ?
2. अपनी पाठ्यपुस्तक के कुछ मुहावरे और लोकोक्तियाँ चुनकर वाक्य में प्रयोग कीजिए ?
3. उपर्युक्त दी गई सूची में से दस मुहावरे और लोकोक्तियाँ चुनकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

